विंसेंट वान गॉग

एलीन लुकास

चित्र: रोशेल ड्रेपर

विंसेंट वैन गॉग दुनिया के सबसे प्रसिद्ध चित्रकारों में से एक हैं. वो अपने चमकीले रंग के चित्रों के लिए सबसे ज्यादा जाने जाते हैं, लेकिन विंसेंट का काम हमेशा इतना रंगीन नहीं था.

विंसेंट वान गॉग

एलीन लुकास

चित्र: रोशेल ड्रेपर
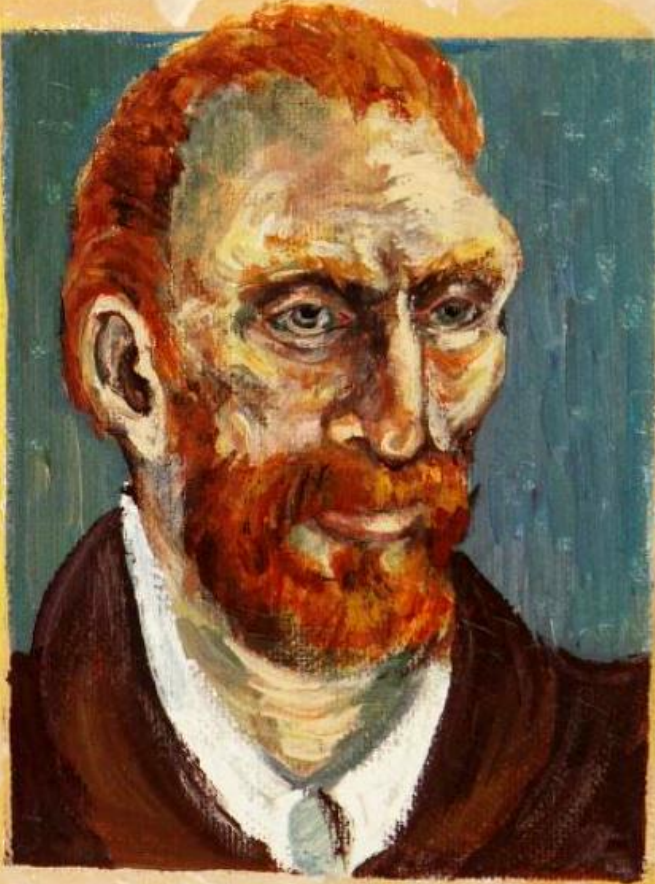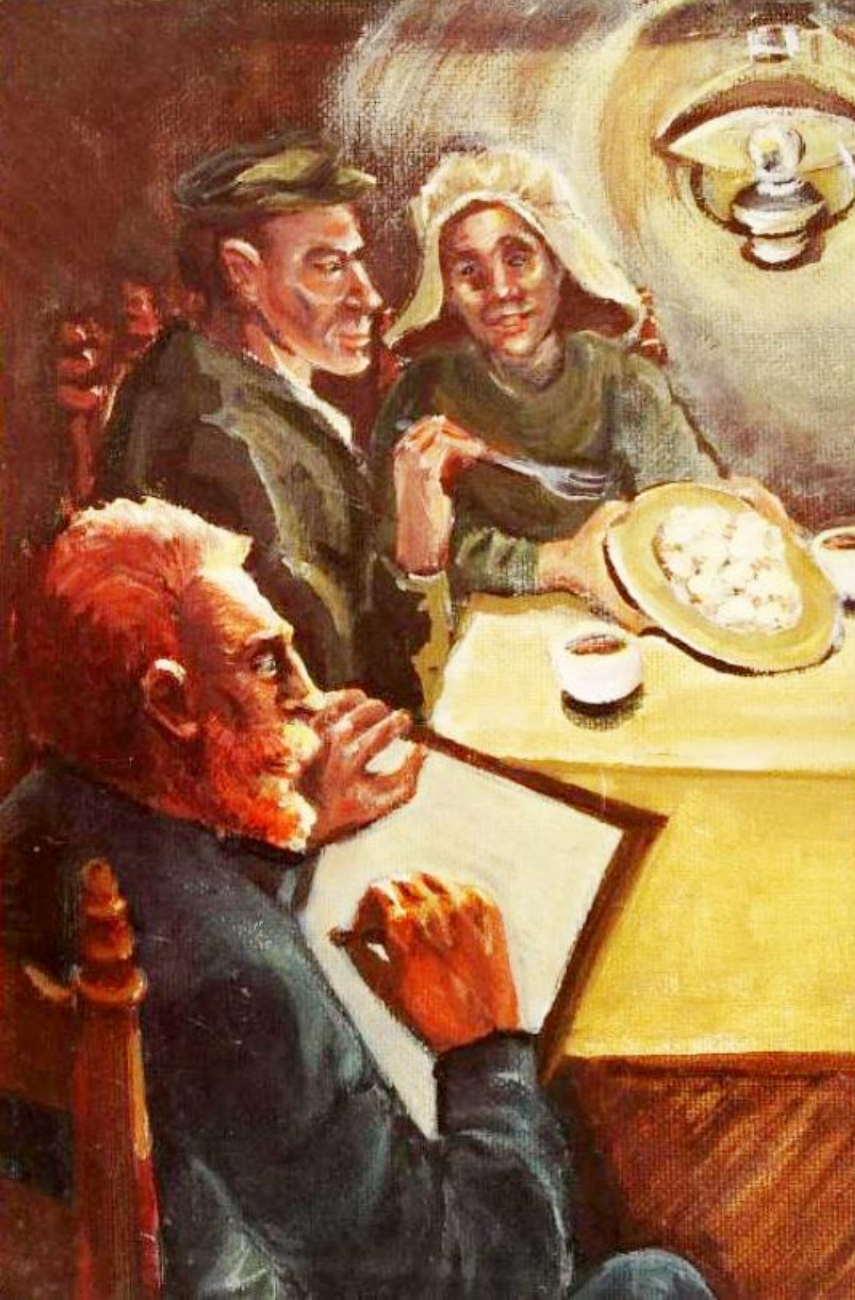
हॉलैंड

मई 1885

एक शाम विंसेंट वैन गॉग, एक परिवार को रात का भोजन करते देखने के लिए बैठे.

परिवार के छोटे से घर में अंधेरा था.

उनका एकमात्र भोजन आलू था.

विंसेंट ने उनके साथ भोजन नहीं खाया.

वो उनका चित्र बनाने के लिए वहां गए थे.

पाँच वर्ष से विंसेंट एक कलाकार के रूप में काम कर रहे थे.

उन्होंने पेंसिल और चारकोल की छड़ियों से ड्राइंग बनाने की शुरुआत की थी.

वो अक्सर अपने आसपास रहने वाले और काम करने वाले किसानों और बुनकरों के चित्र बनाते थे.

इनमें से अधिकांश लोग गरीब थे, और उनका जीवन बहुत कठिन था.

जीवन की गर्दिश उनके चेहरे और उनके हाथों में साफ़ दिखाई देती थी.

विंसेंट ने उसे अपने रेखाचित्र में प्रदर्शित किया.

जैसे-जैसे वो अधिक कुशल होते गए, विंसेंट ने ऑइल पेंट्स का उपयोग करना शुरू कर दिया.

अब वो आलू खाने वाले परिवार की पेंटिंग को रंगना चाहते थे.

विंसेंट ने महीनों तक इस पेंटिंग पर काम किया.

ज्यादातर वो बहुत गहरे हरे और भूरे रंग का इस्तेमाल करते थे.

मेज के ऊपर तेल के दीपक में ही सिर्फ एक चमकीला पीला स्थान होता था.

जब वो पेंटिंग समाप्त हुई, तो उन्होंने उसे अपने भाई थियो के पास भेज दी.

थियो, पेरिस, फ्रांस में रहता था.

वो एक गैलरी में काम करता था, एक ऐसी जगह जहां पेंटिंग्स बेची जाती थीं.

उसने विंसेंट द्वारा भेजी गए चित्रों को बेचने की कोशिश की.

लेकिन कोई भी विंसेंट की तस्वीरें ख़रीदना नहीं चाहता था.

फिर भी, हर हफ्ते थियो, विंसेंट को कुछ पैसे भेजता था.

उनसे विंसेंट कलाकारी का सामान खरीद पाते थे.

वो उस कमरे का किराए भी भर पाते थे जहां वो रहते थे.

फिर यदि कुछ पैसे बचते तो उनसे वो अपना भोजन भी खरीद सकते थे.

विंसेंट के पास अक्सर खाने के लिए केवल रोटी और आलू ही होते थे.

कभी-कभी उनके पास खाने के लिए कुछ भी नहीं होता था.

इसके चलते वो अक्सर कमजोर और बीमार रहते थे.

लेकिन उन्होंने कभी हार नहीं मानी.

उन्होंने थियो को लिखा, "मैं वही करूंगा जो मैं कर सकता हूं. मैं कड़ी मेहनत करूंगा."

उनके चित्र प्रकाश और चमकीले रंगों से भरे होते थे.

वो छोटे और तेज ब्रश स्ट्रोक इस्तेमाल करते थे.

वो जो कुछ देखते, वे उसका एक आभास, या विचार चित्रित करने का प्रयास करते थे.

विंसेंट ने फैसला किया कि वो उनके चित्रों को खुद देखेगा.
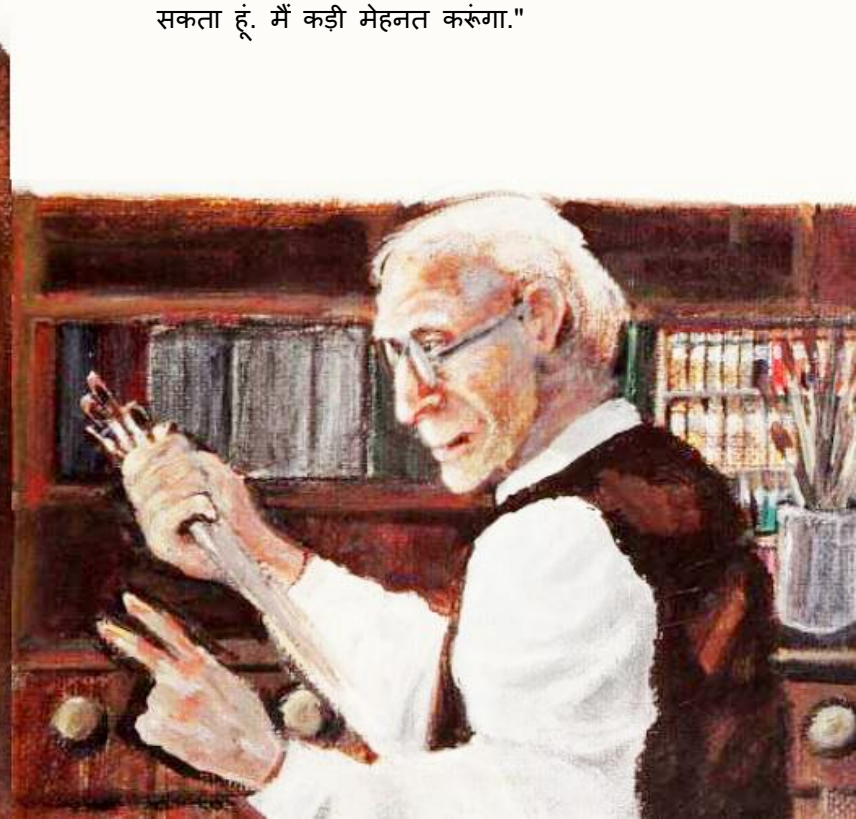
विंसेंट ने थियो को कई पत्र लिखे.

कभी-कभी वो अपने पत्रों में छोटी-छोटी तस्वीरें भी जोड़ देते थे.

थियो भी विंसेंट को लिखते थे.

उन्होंने विंसेंट को पेरिस में रहने वाले कुछ चित्रकारों के बारे में बताया.

उन्हें "इम्प्रेशनिस्ट" कहा जाता था.
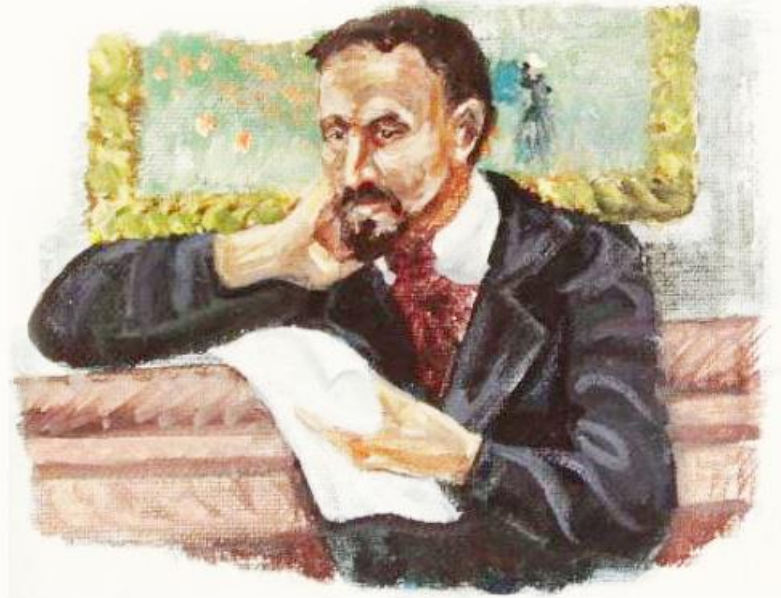
पेरिस, फ्रांस

फरवरी 1886

एक संदेशवाहक ने थियो को एक नोट दिया.

वो नोट विंसेंट का था.

वो पेरिस के एक कला संग्रहालय में थियो का इंतजार कर रहा था.

थियो अपने भाई से मिलने गया.

तुरंत, उसने विंसेंट को अपने साथ रहने के लिए आमंत्रित किया.

थियो, विंसेंट से चार साल छोटा था, लेकिन वो उससे अक्सर एक बड़े भाई की तरह व्यवहार करता था.

उन्होंने जल्द ही विंसेंट को एक दंत चिकित्सक और एक डॉक्टर के पास भेजा.

थियो ने अपनी मां को लिखा, "मुझे लगता है कि विंसेंट का मुश्किल समय अब खत्म हो गया है."

लेकिन विंसेंट के साथ घुलना-मिलना आसान नहीं था.

वो सब के साथ बहस करते थे, यहाँ तक कि उन लोगों से भी जिनकी वो सबसे अधिक परवाह करते थे.

गुस्सा आने पर वो जोर से चिल्लाते थे.

और उन्हें बहुत गुस्सा आता था.

कभी-कभी वो डच, अंग्रेजी और फ्रेंच भाषाओं के मिश्रण में लोगों पर चिल्लाते थे!

वो देर रात तक बाहर रहते थे.

उन्होंने थियो के अपार्टमेंट को अपने कपड़ों और पेन्ट से गंदा कर दिया था.

"वो जीवन को कठिन बना देता है," थियो ने लिखा.

लेकिन थियो, विंसेंट से बहुत प्यार करता था.

और विंसेंट भी उससे प्यार करते थे.

जब विंसेंट पेरिस में था, तब उनकी मुलाकात कई चित्रकारों से हुई.

उन्होंने कैफे में उनके साथ खाया-पिया और बातें कीं.

उन्होंने पेरिस के नीले आसमान के नीचे उनके साथ बाहर पेंटिंग की.

उन्हें बाहर पेंटिंग करना बहुत पसंद था!

प्रकृति के रंगों को धूप में जीवंत होते देखना उन्हें बहुत अच्छा लगता था.

फिर विंसेंट ने अपने चित्रों में इन चमकीले रंगों का उपयोग करना शुरू किया.

वो छोटे ट्यूबों से पेंट दबाकर अपने पैलेट पर डाल देते थे.

फूलों के लिए गुलाबी, लाल और बैंगनी रंग.

आसमान के लिए नीले रंग के कई शेड्स.

और सूर्य के लिए पीला रंग.

विंसेंट दो साल तक पेरिस में रहे.

वहां अन्य चित्रकारों से उन्होंने बहुत कुछ सीखा.

लेकिन वो पेंट करने के अपने एक विशेष तरीके पर काम करना चाहते थे.

फिर उन्होंने दक्षिण जाने का फैसला किया, जहां अधिक तेज़ सूरज और गर्मी थी.

उन्होंने अपने कमरे में चित्रफलक पर एक पेंटिंग छोड़ दी, इस उम्मीद में कि थियो अकेला नहीं महसूस करेगा.

उन्होंने अपने कई अन्य चित्रों को भी दीवारों पर लटकाकर छोड़ दिया.

फिर उन्होंने फ्रांस के दक्षिण जाने वाले एक ट्रेन ली.

एरीज, फ्रांस

फरवरी 1888

एरीज में ठंड थी और वहां जमीन पर बर्फ थी.

लेकिन विंसेंट इस स्थान पर आकर प्रसन्न थे.

वहाँ उन्हें एक सराय मिली जहाँ वो खा और सो सकते थे.

फिर वो अपने काम पर लग गए.

"यहाँ मैं नई चीजें देख रहा हूँ. मैं बहुत सीख रहा हूँ," उन्होंने थियो को लिखा.

जल्द ही सूरज निकला और सारी बर्फ पिघल गई.

फिर "मिस्ट्रल" कहलाने वाली तेज ठंडी हवायें बहने लगीं.

लेकिन विंसेंट उन फलों के पेड़ों को रंगना चाहते थे जो खिले हुए थे.
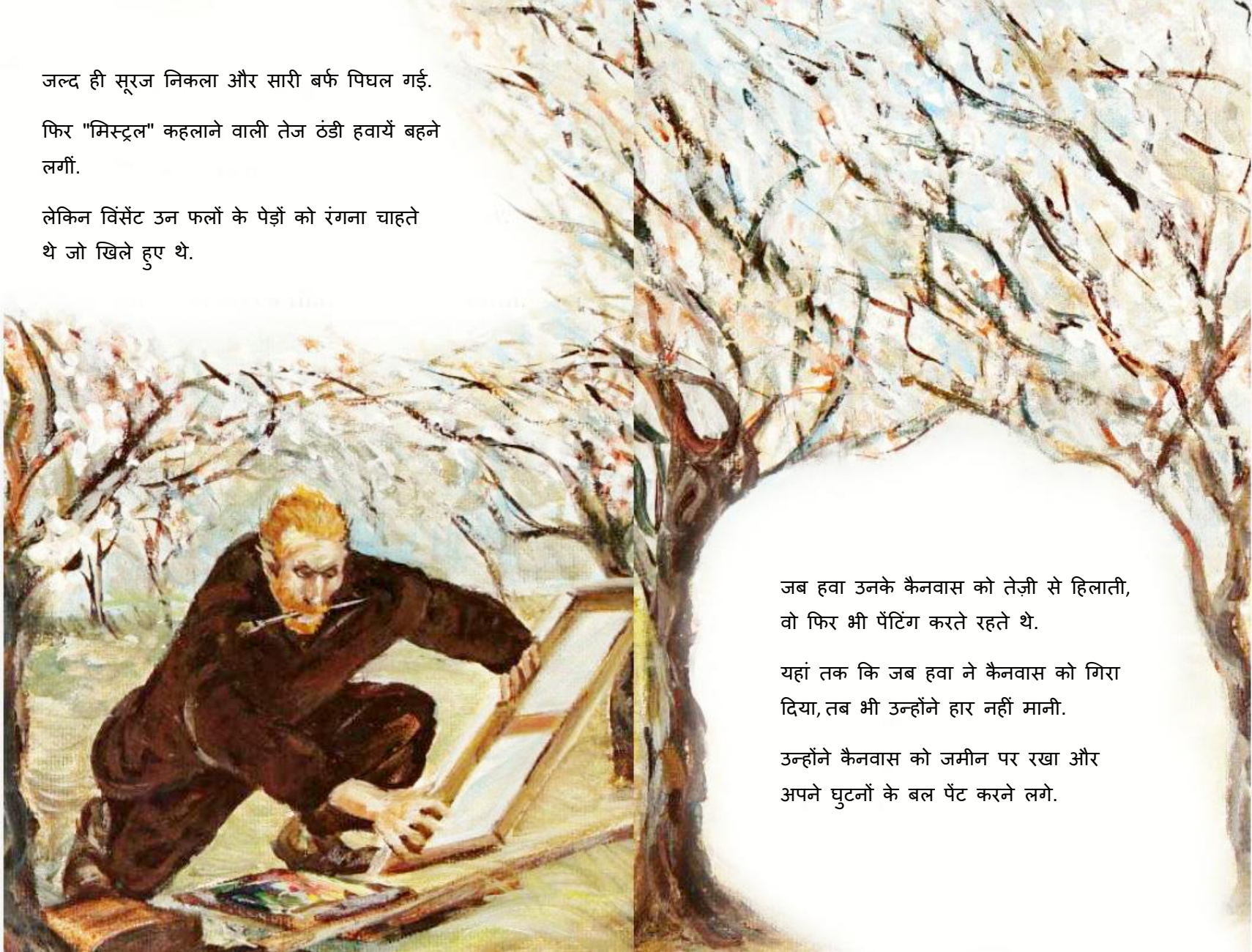
जब हवा उनके कैनवास को तेज़ी से हिलाती, वो फिर भी पेंटिंग करते रहते थे.

यहां तक कि जब हवा ने कैनवास को गिरा दिया, तब भी उन्होंने हार नहीं मानी.

उन्होंने कैनवास को जमीन पर रखा और अपने घुटनों के बल पेंट करने लगे.

विंसेंट ने चमकीले और अधिक चमकीले रंगों का इस्तेमाल किया.

कभी-कभी वो अपनी पेंटिंग पर सीधे ट्यूब से पेंट निचोड़ देते थे.

वो पेंट की मोटी लकीरों को वैसे ही छोड़ देते थे.

मोटी पेंट की लकीरें और रेखायें उनके काम को ढँक देती थीं.

कभी-कभी उनकी पेंटिंग्स को सूखने में हफ्तों लग जाते थे क्योंकि उन पर बहुत ज्यादा पेंट होता था!
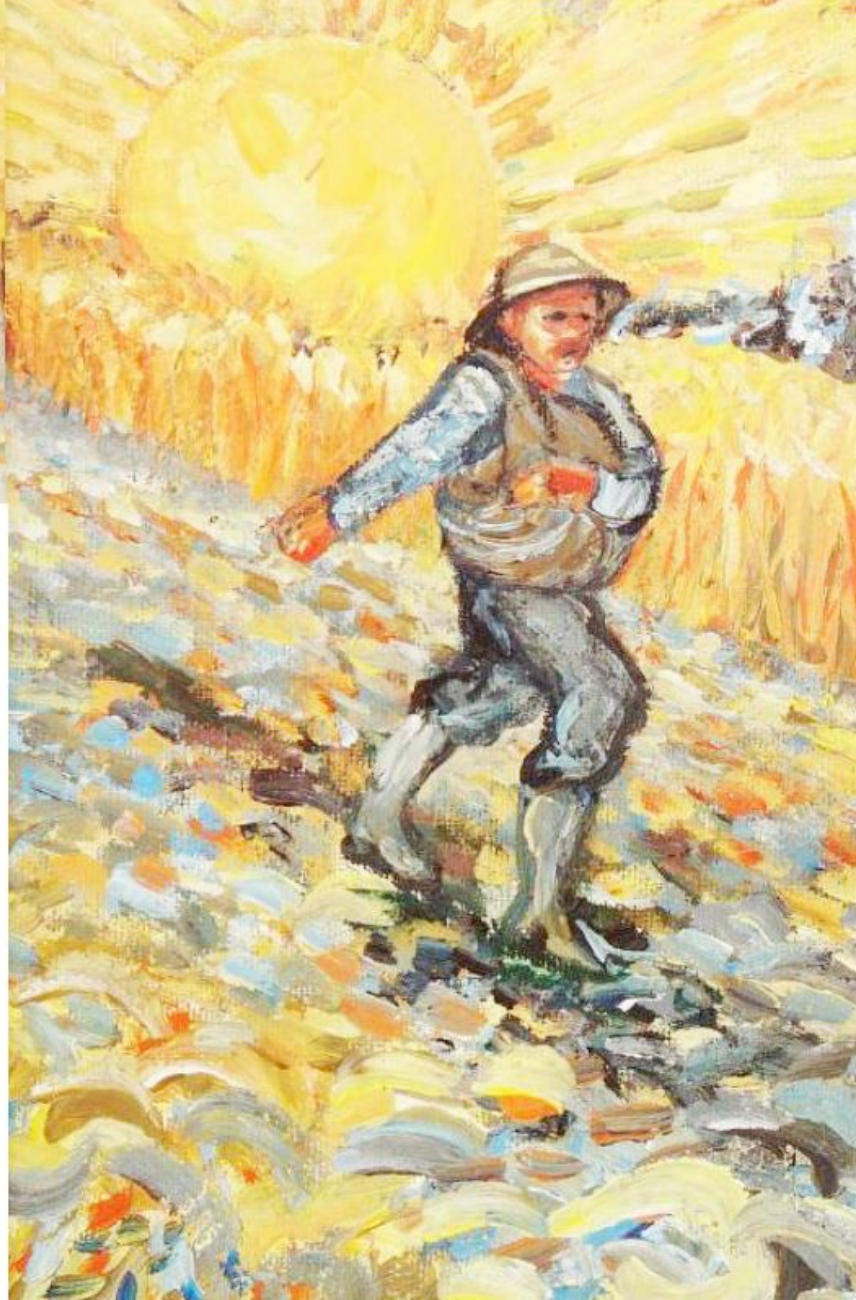
जल्द ही वसंत गर्मियों में बदला, लेकिन विंसेंट पेंटिंग करते ही रहे.

जब गर्म दोपहर का सूरज आसमान में चमक रहा होता था, तब ज्यादातर लोग आराम करने के लिए किसी ठंडी जगह की तलाश करते थे.

लेकिन विंसेंट नहीं.

वो गेहूँ के सुनहरे खेतों में खड़े होकर वहाँ लहलहाते गेहूँ की पेंटिंग बनाते थे.

उन्होंने चमकीले नीले आकाश के नीचे खड़े पीले पुल का चित्र बनाया.

उन्होंने नदी में कपड़े धोती महिलाओं के चित्र बनाए.

उन्होंने किसानों की झोपड़ियों को उनके लाल कबेलुओं के साथ रंगा.

अंधेरा हो जाने पर भी विंसेंट नहीं रुकते थे.

वो अपनी टोपी के ऊपर मोमबत्तियाँ चिपकाते थे और फिर से पेंटिंग करने लगते थे!

उन्होंने रात के रंग दिखाने के लिए बैंगनी, नीले और हरे रंगों को चुना.

उन्होंने सूर्य का स्थान लेने वाले तारों और लालटेन के लिए पीले रंग का प्रयोग किया.

दिन-ब-दिन वो सिर्फ पेंटिंग ही करते रहते थे.

जब सूरज की तपिश ने उसके लाल सिर को जला दिया, तो उन्होंने पुआल की टोपी पहन ली और फिर पेंटिंग करने लगे.

उन्हें इस बात की कोई परवाह नहीं थी कि चिलचिलाती धूप उन्हें बीमार कर सकती थी.

सूरज हर चीज़ को उज्जवल बनाता था, और विंसेंट को वो पसंद था.
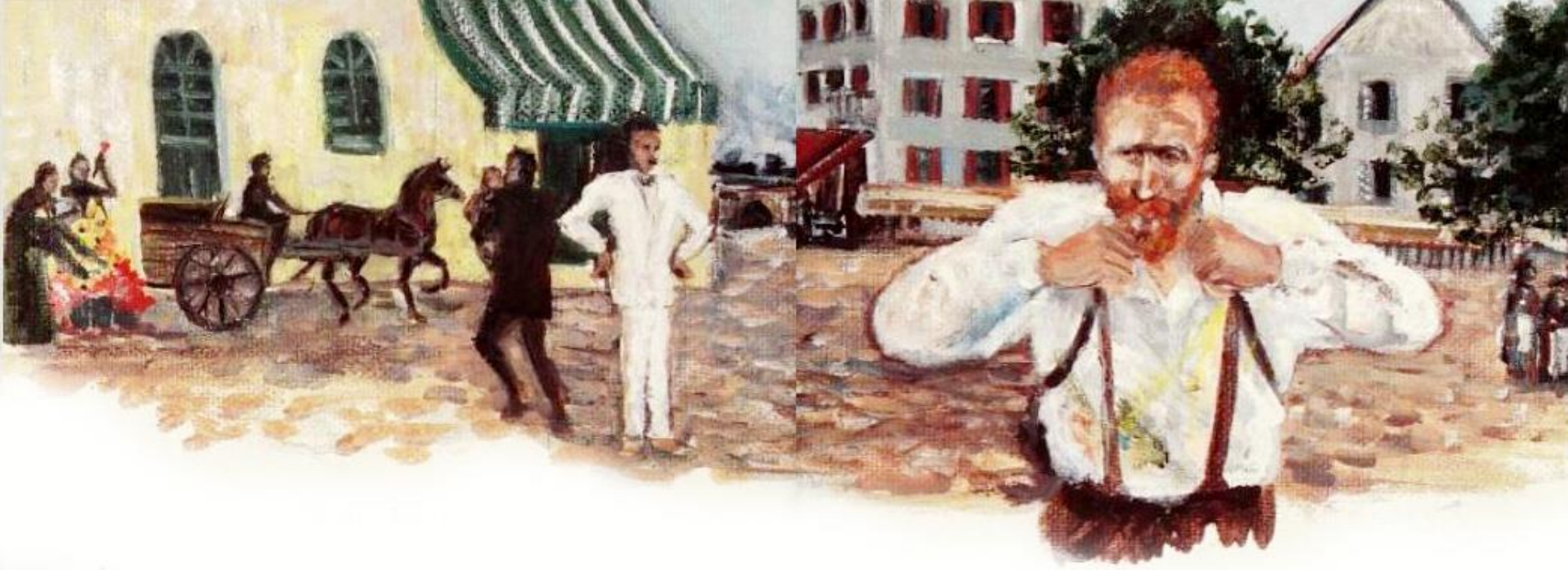
एरीज के लोगों को विंसेंट ज़रूर बहुत अजीब लगे होंगे.

वो अपनी पेंटिंग की चीजों को अपनी पीठ पर लादते थे.

उनके कपड़े झुर्रीदार होते थे और पेंट से ढके होते थे.

उनके लाल बाल सभी दिशाओं में बह रहे होते थे.

उत्तेजित होने पर वो अपनी बालों में उँगलियाँ फेरते थे.

वहां विंसेंट को पेंट करने के लिए बहुत कुछ मिला.

और जो उन्हें भाता वो उसे तुरंत पेंट करना चाहते थे.

उनके महान कार्यों में से एक, "द हार्वेस्ट", को उन्होंने एक ही दिन में पेन्ट कर डाला था.

उन्हें डर था कि लोग सोचेंगे कि उन्होंने बहुत तेजी से काम किया होगा.

लेकिन उन्होंने कहा कि उन्हें जल्दी से काम करना था, "बिल्कुल कटाई करने वालों की तरह."

विंसेंट जल्द ही सराय में रहते-रहते थक गए.

मौसम खराब होने पर उन्हें काम करने के लिए एक जगह की जरूरत थी.

फिर उन्हें एक ऐसा घर मिला जो उनके लिए बिल्कुल सही था.

वो एक पीला घर था - सूरज के रंग का, तारों और लालटेन के रंग का.

उन्होंने एक बिस्तर और कुछ कुर्सियाँ खरीदीं.

फिर उन्होंने अपने शयनकक्ष का एक चित्र पेन्ट किया.

उन्होंने दीवारों पर टांगने के लिए सूरजमुखी के फूल बनाए.

वे सूर्य के समान चमकीले पीले रंग के थे.

विंसेंट उन्हें देखना पसंद करते थे.

विंसेंट ने एक अन्य चित्रकार, पॉल गाउगिन को वहाँ आने के लिए आमंत्रित किया.

उनका सपना था कि उनके छोटे घर में तमाम चित्रकार एक-साथ पेन्ट करें.

अक्टूबर के अंत में, पॉल, एरीज में रहने आया.

दो महीने तक दोनों कलाकारों ने, येलो हाउस में एक-साथ काम किया.

लेकिन विंसेंट अपना बहुत ख्याल नहीं रख रहे थे.

वो खाते नहीं थे और बहुत मेहनत करते थे.

बहुत थकने पर भी वो आराम नहीं करते थे.

उन्होंने पॉल गाउगिन के साथ बहस की और लड़ाई की.

एक भयानक लड़ाई के बाद, पॉल गाउगिन ने एरीज छोड़ने का फैसला किया.

विंसेंट बहुत बीमार थे और वो ठीक से सोच भी नहीं पा रहे थे.

अपनी देखभाल के लिए वो एक मानसिक अस्पताल में भर्ती हुए.

कभी वो बहुत परेशान हो जाते थे, तो कभी बहुत उदास.

इस दौरान वो पेंटिंग भी नहीं कर पाए.

लेकिन जब वो बेहतर महसूस करते, तो वो केवल पेंट ही करना चाहते थे.

और तब वो कुछ बहुत ही सुन्दर चित्र उकेरते थे.
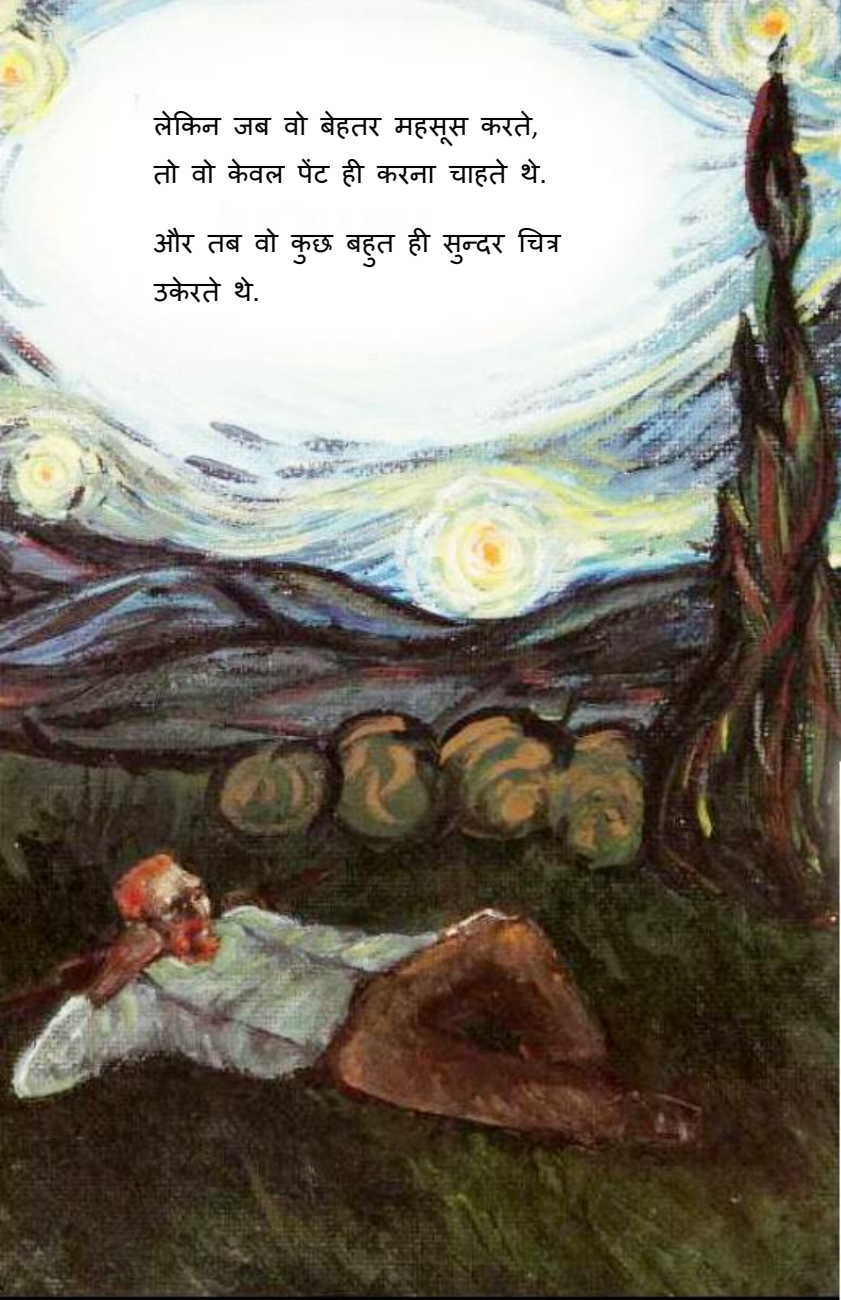
इनमें से एक "द स्टारी नाइट" है.

उसमें रात के समय का आकाश दिखाया गया है जो भंवरों की रोशनी के साथ चमक रहा है.

एक बार विंसेंट ने कहा था, "सितारों को देखकर मुझे हमेशा सपने आते हैं."

विंसेंट ने अपनी खुद की एक शैली खोज ली थी.

उन्होंने अपने चित्रों में अपनी भावनाओं को दिखाया था.

उन्होंने रंगों और पेन्ट्स के उपयोग के नए तरीके खोजे थे.

लेकिन उनकी तबीयत बेहतर होने का कोई रास्ता नहीं मिला.

वो बहुत बीमार और बहुत थक गए थे.

ऐसा लगता था कि कुछ भी उन्हें ठीक नहीं कर सकता था.

विंसेंट केवल सैंतीस वर्ष के थे जब उनकी मृत्यु हुई.

उनके भाई और उनके दोस्तों ने उनके ताबूत पर पीले फूल चढ़ाए.

उन्होंने विंसेंट द्वारा बनाई गई कई पेंटिंग्स को देखा.

अपने चित्रों में बनाए सूरज और सितारों में,
विंसेंट वैन गॉग हमेशा जीवित रहेंगे.
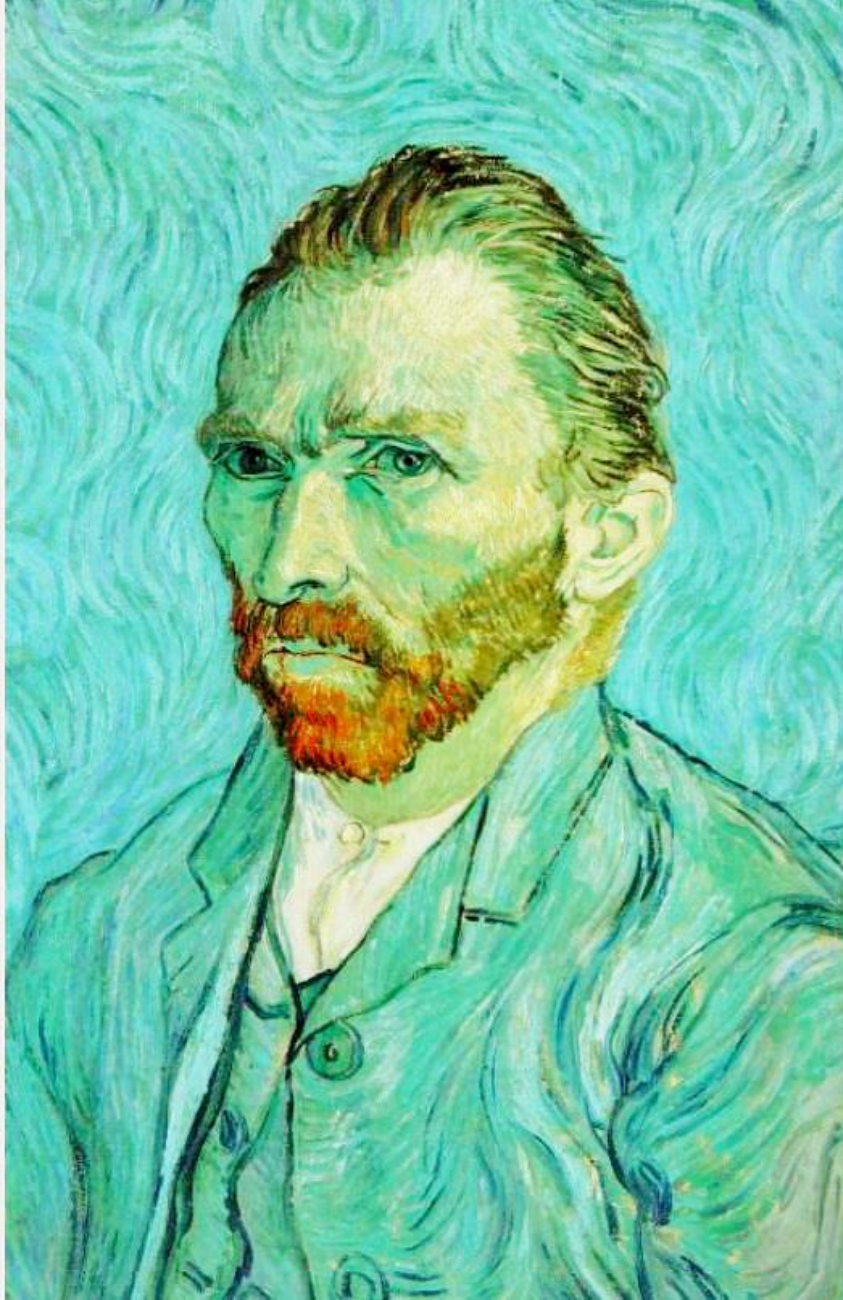
सेल्फ-पोर्ट्रेट (1889)
विंसेंट वैन गॉग द्वारा

अंत के शब्द

जब विंसेंट की मृत्यु हुई, तो थियो बहुत दुखी हुआ. वो बहुत बीमार हो गया और छह महीने बाद उसकी भी मृत्यु हो गई. थियो की पत्नी जोहाना जानती थी कि दोनों भाई एक-दूसरे की कितनी परवाह करते थे. उसने यह सुनिश्चित किया कि वे एक-दूसरे के बगल में ही दफनाए जाएँ. उसने उन सभी पत्रों को भी सहेजकर रखा जो उन्होंने एक-दूसरे को लिखे थे, और उन सभी पेंटिंग और रेखाचित्रों को भी जो विंसेंट ने थियो को दिए थे.

दस छोटे वर्षों में विंसेंट ने सैकड़ों चित्र पेन्ट किए थे - दो सौ से अधिक जब वो पेरिस में रहते थे और दो सौ से अधिक जब वे एरीज में रहते थे. हालांकि विंसेंट ने अपने जीवनकाल में केवल एक ही पेंटिंग बेची, लेकिन अब लोग विंसेंट वैन गॉग की एक पेंटिंग के लिए लाखों डॉलर का भुगतान करते हैं.

महत्वपूर्ण तिथियाँ

30 मार्च, 1853—विंसेंट वैन गॉग का जन्म ज़ंडर्ट, हॉलैंड में हुआ

1873-1876—लंदन और पेरिस की कला दीर्घाओं में काम किया

1878-1879—एक प्रचारक बने और बेल्जियम में काम किया

1880—एक कलाकार बनने का निर्णय लिया; भाई थियो ने समर्थन दिया

1880-1886—बेल्जियम और हॉलैंड में रहते हुए कलाकार के रूप में कौशल में सुधार किया

मई 1885— "द पोटेटो ईटर्स" पेंटिंग बनाई

फरवरी 1886—पेरिस, फ्रांस पहुंचे

फरवरी 1888—एरीज, फ्रांस गए

दिसंबर 1888—एरीज के अस्पताल में भर्ती हुए

मई 1889—फ्रांस के सेंट रेमी में एक मानसिक अस्पताल में दाखिल हुए

जून 1889—पेंटिंग "द स्टारी नाईट" बनाई

मई 1890—औवर्स, फ्रांस ले जाया गया

29 जुलाई, 1890—औवर्स में निधन